खण्ड-182, अंक-2
बुधवार, 20 चैत्र, शक संवत् 1879
(10 अप्रैल, 1957 ई0)

उत्तर प्रदेश विधान सभा

की

कार्यवाही

(अधिकृत विवरण)

खण्ड 182 में 7 अंक है

उत्तर प्रदेश विधान सभा सचिवालय (कार्यवाही अनुभाग) द्वारा प्रकाशित

मुद्रक:

निदेशक, राजकीय मुद्रण एवं लेखन सामग्री, उत्तर प्रदेश (भारत)

१९५७

मूल्य : बिना महसूल 25 पैसे, महसूल सहित 25 पैसे |

वार्षिक चन्दा : बिना महसूल 10 रुपये, महसूल सहित 12 रुपये |

उत्तर प्रदेश विधान सभा

बुधवार, २० चैत्र, शकाब्द १८७९ (१० अप्रैल, १९५७ ई०)

विधान सभा की बैठक सभा-मण्डप, लखनऊ, में ११ बजे दिन में विधान सभा प्रक्रिया नियमावली के नियम ५ (३) के अन्तर्गत श्री राज्यपाल द्वारा नियुक्त श्री बेचनराम गुप्त के सभापतित्व में आरम्भ हुई।

उपस्थित सदस्य (३९०)

अक्षयवर सिंह, श्री
अजीज इमाम, श्री
अनन्तराम वर्मा, श्री
अब्दुल रऊफ लारी, श्री
अब्दुल लतीफ़ नोमानी, श्री
अब्दुस्समी, श्री
अमरनाथ, श्री
अमरेशचन्द्र पांडेय, श्री
अमोलादेवी, श्रीमती
अयोध्याप्रसाद आर्य, श्री
अली जर्रार जाफ़री, श्री
अली जहीर, श्री सैयद
अल्लाह बख्श, श्री शेख
अवधेशकुमार सिनहा, डाक्टर
अवधेशचन्द्र सिंह, श्री
अवधेशप्रताप सिंह, श्री
असग़र अली खां, कुंवर
असलम खां, श्री
अहमद बख्श, श्री
आचार्य दीपांकर, श्री
आत्माराम पांडेय, श्री
आदिराम सिंघल, श्री
आनन्दब्रह्मशाह, श्री
इन्द्रभूषण गुप्त, श्री
इरतजा हुसैन, श्री
इस्तफ़ा हुसैन, श्री
उग्रसेन, श्री
उदयशंकर, श्री
उबैदुर्रहमान, श्री
उमाशंकर शुक्ल, श्री
उल्फ़त सिंह, श्री
ऊदल, श्री
कन्हैयालाल वाल्मीकि, श्री
कमलकुमारी गोइंदी, कुमारी
कमलापति त्रिपाठी, श्री
कमलेशचन्द्र, श्री उपनाम कमले
कल्याणचन्द मोहिले, श्री उपनाम छ्न्न गुरु
कल्याणराय, श्री
कामता प्रसाद विद्यार्थी, श्री
कालीचरण अग्रवाल, श्री
काशीप्रसाद पांडेय, श्री
किशनसिंह, श्री
किशोरीरमण सिंह, श्री
कुंवरकृष्ण वर्मा, श्री
केशभानराय, श्री
केशव पांडेय, श्री
केशवराम, श्री
कैलाशकुमार सिंह, श्री
कैलाशनारायण गुप्त, श्री
कैलाशवती, श्रीमती
कैलाशप्रकाश, श्री
कोतवालसिंह भदौरिया, श्री
कृपाशंकर, श्री
खमानीसिंह, डाक्टर
खयालीराम, श्री
खूबसिंह, श्री
गंगाधर जाटव, श्री
गंगाप्रसाद, श्री (गोंडा)
गंगाप्रसाद वर्मा, श्री (एटा)
गंगाप्रसाद सिंह, श्री
गज्जूराम, श्री
गणेशप्रसाद पांडेय, श्री
गनेशचन्द्र काछी, श्री
गनेशीलाल चौधरी, श्री
गयाप्रसाद, श्री
गयाबख्शसिंह, श्री
गयूर अली खां, श्री

गरीबदास, श्री
गिरधारीलाल, श्री
गुप्तारसिंह, श्री
गुरुप्रसादसिंह, श्री
गुलाबसिंह, श्री
गेंदादेवी, श्रीमती
गेंदा सिंह, श्री
गोकुलप्रसाद, श्री
गोपाली, श्री
गोपीकृष्ण आजाद, श्री
गोविन्दनारायण तिवारी, श्री
गोविन्दसिंह विष्ट, श्री
गौरीशंकर, श्री
घनश्यामसिंह डमरी , श्री
घासीराम जाटव, श्री
चन्द्रजीत यादव, श्री
चन्द्रदेव, श्री
चन्द्रबली शास्त्री ब्रह्मचारी, श्री
चन्द्रावती, श्रीमती
चन्द्रहासमिश्र, श्री
चन्द्रिका प्रसाद, श्री
चरणसिंह, श्री
चित्तरसिंह निरंजन, श्री
चिरंजीलाल जाटव, श्री
छत्तर सिंह, श्री
छत्रपति अम्बेश, श्री
छेदीलाल, श्री
छोटेलाल पालीवाल, श्री
जगबहादुर वर्मा, श्री
जंगबहादुरसिंह विष्ट, श्री
जगदीशनारायण, श्री
जगदीशनारायणदत्तसिंह, श्री
जगदीशशरण अग्रवाल, श्री
जगन्नाथ,चौधरी
जगन्नाथप्रसाद, श्री
जगन्नाथलहरी, श्री
जगपतिसिंह, श्री
जगमोहन सिंह नेगी, श्री
जगवीरसिंह, श्री
जगेश्वर, श्री
जमुनासिंह, श्री (गाजीपुर)
जमुनासिंह, श्री (बदायूं)
जयगोपाल, डाक्टर
जयराम वर्मा, श्री
जयेन्द्रसिंह विष्ट, श्री
जरगाम हैदर, श्री सैयद
जवाहरलाल, श्री
जवाहरलाल रोहतगी, डाक्टर
जुगलकिशोर, आचार्य
जोखई, श्री
ज्वालाप्रसाद, श्री
झारखंडेराय, श्री
टम्बरेश्वरप्रसाद, श्री
टीकाराम, श्री
टीकाराम पुजारी, श्री
डूगरसिंह, श्री
ताराचन्द माहेश्वरी, श्री
तारादेवी, डाक्टर
तेज बहादुर, श्री
तेजासिंह, श्री
त्रिलोकी सिंह, श्री
दत्त, श्री एस० जी०
दशरथप्रसाद, श्री
दातारामचौधरी
दीनदयालु शर्मा, श्री
दीनदयालु करुण, श्री
दीनदयालु शास्त्री, श्री
दीपनारायणमणि त्रिपाठी, श्री
दुर्योधन, श्री
दुलारादेवी, श्रीमती
देवकीनन्दन विभव, श्री
देवदत्त सिंह, श्री
देवनारायण भारतीय, श्री
देवराम, श्री
देवीप्रसाद मिश्र, श्री
द्वारकाप्रसाद, श्री (मुजफ्फरनगर)
द्वारिका प्रसाद, श्री (फर्रुखाबाद)
धनीराम, श्री
धनुषधारी पांडेय, श्री
धर्मदत्त वैद्य, श्री
धर्मसिंह, श्री
नत्थाराम रावत, श्री
नत्थूसिंह, श्री (बरेली)
नत्थूसिंह, श्री (मैनपुरी)
नन्दकुमारदेव वाशिष्ठ, श्री
नन्दराम, श्री
नरदेवसिंह दरियानवी, श्री
नरेन्द्र सिंहभंडारी, श्री
नरेन्द्रसिंह विष्ट, श्री
नवलकिशोर, श्री
नागेश्वरप्रसाद, श्री
नारायणदत्त तिवारी, श्री
नारायण दास, श्री
निरंजनसिंह, श्री

नेकराम शर्मा, श्री
पद्माकरलाल श्रीवास्तव, श्री
पन्नारराम, श्री
परमानन्द सिनहा, श्री
परमेश्वरीदीन वर्मा, श्री
प्रकाशवती सूद, श्रीमती
प्रतापबहादुरसिंह, श्री
प्रतापभानुप्रकाशसिंह, श्री
प्रतापसिंह, श्री
प्रभावती मिश्र, श्रीमती
प्रभुदयाल, श्री
फतेहसिंह राणा, श्री
बजरंगबिहारीलाल रावत, श्री
बलदेवसिंह, श्री
बलदेवसिंह आर्य, श्री
बसंतलाल, श्री
बादामसिंह, श्री
बाबूराम, श्री
बाबूलाल कुसुमेश, श्री
बालकराम, श्री
बालेश्वरप्रसाद सिंह, श्री
बासदेव, श्री
बिशम्बरसिंह, श्री
बिहारी लाल, श्री
बुलाकीराम, श्री
बुद्धेलाल, श्री
बुद्धीसिंह, श्री
बैचनराम, श्री
बेचनराम गुप्त, श्री
बेनीबाई, श्रीमती
बैजूराम, श्री
ब्रजगोपाल सक्सेना, श्री
ब्रजवासीलाल, श्री
ब्रजभूषण शरण, श्री
ब्रजरानी मिश्र, श्रीमती
भगवतीप्रसाद, श्री
भगवतीप्रसाद दुबे,श्री
भगवतीप्रसाद शुक्ल, श्री
भगवतीसिंह विशारद, श्री
भजनलाल, श्री
भीखालाल, श्री
भुवनेशभूषण शर्मा, श्री
भूपकिशोर, श्री
मंगलाप्रसाद, श्री
मंजूरुलनबी, श्री
मथुराप्रसाद पांडेय, श्री
मदनगोपाल वैद्य, श्री
मदन पांडेय, श्री
मदनमोहन, श्री
मन्नालाल, श्री
मलखानसिंह, श्री
मलिखानसिंह, श्री (मैनपुरी)
महमूद अली खां, कुंवर (मेरठ)
महमूद अली खां, श्री (रामपुर)
महमूद अली खां, श्री (सहारनपुर)
महमूद हुसैन खां, श्री
महावीरप्रसाद शुक्ल, श्री
महावीरप्रसाद श्रीवास्तव, श्री
महीलाल, श्री
महेन्द्ररिपुदमन सिंह,राजा
महेशसिंह, श्री
सालाप्रसाद, श्री
मान्धातासिंह, श्री
मिहरबानसिंह, श्री
मुकुटबिहारीलाल अग्रवाल, श्री
मुक्तिनाथ राय, श्री
मुज़फ्फर हसन, श्री
मुनीन्द्रपालसिंह, श्री
मुबारक अली खां, श्री
मुरलीधर, श्री
मुरलीधर कुरील, श्री
मूलचन्द, श्री
मुल्लाप्रसाद 'हंस', श्री
मुहम्मद इब्राहीम, श्री हाफिज
मुहम्मद फ़ारूक़ चिश्ती, श्री
मुहम्मद सुलेमान अधमी, श्री
मुहम्मद हुसैन, श्री
मोतीलाल अवस्थी, श्री
मोहनलाल, श्री
मोहनलाल गौतम, श्री
मोहनलाल वर्मा, श्री
मोहनसिंह मेहता, श्री
यशपालसिंह, श्री
यशोदादेवी, श्रीमती
यादवेन्द्रदत्त दुबे, राजा
रऊफ जाफरी, श्री
रघुनाथसहाय यादव, श्री
रघुरततेजबहादुर सिंह, श्री
उपनाम लालसाहब
रघुराजसिंह, चौधरी
रघुवीर, श्री
रघुवीर सिंह, श्री (एटा)

रघुवीर सिंह, श्री (मेरठ)
रणबहादुर सिंह, श्री
रमाकान्त सिंह, श्री
रमानाथ खेरा, श्री
रमेशचन्द्र शर्मा, श्री
राघवराम पाण्डेय, श्री
राघवेन्द्रप्रतापसिंह, श्री
राजकुमार, श्री
राजदेव, श्री
राजनारायण, श्री
राजनारायणसिंह, श्री
राजाराम शर्मा, श्री
राजेन्द्रकिशोरी, श्रीमती
राजेन्द्रदत्त, श्री
राजेन्द्रसिंह, श्री
राजेन्द्रसिंह यादव, श्री
रामप्रधार तिवारी, श्री
रामअभिलाख, श्री
रामकिंकर, श्री
रामकिशन, श्री
रामकुमार वैद्य, श्री
रामकृष्ण जैसवार, श्री
रामगोपाल गुप्त, श्री
रामचन्द्र विकल, श्री
रामजीलाल सहायक, श्री
रामजी सहाय, श्री
रामदास, श्री
रामदीन, श्री
रामनाथ पाठक, श्री
रामपाल त्रिवेदी, श्री
रामप्रसाद, श्री
रामप्रसाद देशमुख, श्री
रामप्रसाद नौटियाल, श्री
रामबली, श्री
राममूर्ति, श्री
रामरतनप्रसाद, श्री
रामरती देवी, श्रीमती
रामलक्षण, श्री
रामलखन, श्री (वाराणसी)
रामलाल, श्री
रामवचन यादव, श्री
रामसनेही भारतीय, श्री
राम समझावन, श्री
रामशरण यादव, श्री
रामसिंह चौहान वैद्य, श्री
रामसुन्दर पांडेय, श्री
रामसूरत प्रसाद, श्री
रामस्वरूप, श्री
रामस्वरूप यादव, श्री
रामहेत सिंह, श्री
रामायण राय, श्री
रामेश्वरप्रसाद, श्री
रुकनुद्दीन खां, श्री
रूमसिंह, श्री
लक्ष्मणराव कदम, श्री
लक्ष्मीनारायण, श्री
लक्ष्मीनारायण बंसल, श्री
लक्ष्मीरमन आचार्य, श्री
लायकसिंह, चौधरी
लालबहादुरसिंह, श्री
लुत्फ अली खां, श्री
लोकनाथसिंह, श्री
वशिष्ठनारायण शर्मा, श्री
वसी नक़वी, श्री
विचित्रनारायण शर्मा, श्री
विनयलक्ष्मी सुमन, श्रीमती
विन्दुमती दास, श्रीमती
विशालसिंह, श्री
विश्रामराय, श्री
विश्वनाथसिंह गौतम, श्री
विश्वेश्वरानन्द, स्वामी
वीरसेन, श्री
वीरेन्द्र वर्मा, श्री
वीरेन्द्रशाह, राजा
व्रजविहारी मेहरोत्रा, श्री
शंकरलाल, श्री
शकुंतलादेवी, श्रीमती
शब्बीर हसन, श्री
शमसुल इस्लाम, श्री
शम्भुदयाल, श्री
शांतिप्रपन्न शर्मा, श्री
शिवप्रसाद, श्री (खीरी)
शिवप्रसाद, श्री (देवरिया)
शिवमंगलसिंह, श्री
शिवमूर्तिसिंह, श्री
शिवराजबलीसिंह, श्री
शिवराजबहादुर, श्री
शिवराजसिंह यादव, श्री
शिववचन राव, श्री
शिवशंकरसिंह, श्री
शिवशरणलाल श्रीवास्तव, श्री
शिवराम, श्री

श्याममनोहर मिश्र, श्री
श्यामलाल, श्री
श्यामलाल यादव, श्री
श्रद्धादेवी शास्त्री, कुमारी
श्रीकृष्णदत्त पालीवाल, श्री
श्रीनाथ, श्री (आजमगढ़)
श्रीनाथ भार्गव, श्री (मथुरा)
श्रीनिवास, श्री
श्रीपालसिंह, कुंवर
संग्रामसिंह, श्री
सजीवनलाल, श्री
सज्जनदेवी महनोत, श्रीमती
सत्यवतीदेवी रावल, श्रीमती
सम्पूर्णानन्द, डाक्टर
सरस्वतीदेवी शुक्ल, श्रीमती
सियादुलारी, श्रीमती
सीतलाप्रसाद, श्री
सीताराम, डाक्टर
सीताराम शुक्ल, श्री
सुखरानी देवी, श्रीमती
सुखराम, श्री
सुखीराम भारतीय, श्री
सुदामाप्रसाद गोस्वामी, श्री
सुनीता चौहान, श्रीमती
सुन्दरलाल, श्री
सुरथ बहादुरशाह, श्री
सुरेन्द्रदत्त वाजपेयी, श्री
सुरेन्द्रसिंह, राजकुमार
सुरेशप्रकाशसिंह, श्री
सुल्तान आलम खां, श्री
सूरतचन्द रमोला, श्री
सूर्यबली पांडेय, श्री
हमीदुल्ला खां, श्री
हरकेशबहादुर, श्री
हरदयाल सिंह, श्री
हरदयाल सिंह पिपल, श्री
हरदेव, श्री
हरिदत्त काण्डपाल, श्री
हरिश्चन्द्र अष्ठाना, श्री
हरिश्चन्द्रसिंह, श्री
हरीसिंह, श्री
हलीमुद्दीन (राहत मौलाई), श्री
हिम्मतसिंह, श्री
हुकुमसिंह बिसेन, श्री
हुमवतीनन्दन बहुगुणा, श्री
होरीलाल यादव, श्री

विधान सभा के अध्यक्ष का निर्वाचन

श्री बेचनराम गुप्त—कल १२ बजे दिन तक अध्यक्ष पद के लिये नामांकन, वापसी के पर्चे आने का समय था। केवल तीन नामांकन-पत्र इस पद के लिये आये हुए हैं और वे तीनों श्री आत्माराम गोविन्द खेर के हैं, जिनके प्रस्तावक हैं श्री मंगलाप्रसाद, डाक्टर सम्पूर्णानन्द और श्री कमलापति त्रिपाठी और अनुमोदक हैं श्री मुज़फ्फर हसन, श्री नारायणदत्त तिवारी और श्री विचित्र नारायण शर्मा।

इस वास्ते मैं घोषित करता हूं कि श्री आत्माराम गोविन्द खेर इस सदन के अध्यक्ष पद के लिये निर्वाचित हुए।

(११ बजकर ६ मिनट पर श्री अध्यक्ष ने आसन ग्रहण किया।)

सदस्यों द्वारा शपथ—ग्रहण अथवा प्रतिज्ञान

श्री अध्यक्ष—अब, कल जिनका शपथ-ग्रहण नहीं हो पाया है वे कृपया आयें।

निम्नलिखित सदस्यों ने शपथ ग्रहण की—

१—श्री त्रिलोकीसिंह
२—श्रीमती गेंदादेवी
३—श्री किशोरीरमणसिंह
४—श्री कैलाशनारायण गुप्त
५—श्री रामवचन यादव
६—श्री मुरलीधर
७—श्री बुद्धी लाल
८—श्री रमेशचन्द्र शर्मा
९—श्री नागेश्वर प्रसाद
१०—चौधरी लायक सिंह

११—श्री आनन्दब्रह्मशाह
१२—श्री हरकेश बहादुर
१३—राजा महेन्द्रविक्रमदमनसिंह
१४—कुंवर असगर अली खां

अध्यक्ष पद पर निर्वाचित श्री आत्माराम गोविन्द खेर को बधाई

*मुख्य मन्त्री (डाक्टर संपूर्णानन्द)—अध्यक्ष महोदय, मैं अपनी तरफ से और इस सदन के सभी वर्गों, सभी दलों और सभी सदस्यों की तरफ से आपकी सेवा में विनम्र और स्नेह-पूर्वक बधाई अर्पित करता हूं। मुझे पूरा विश्वास है कि यह सदन ही नहीं, बल्कि सारा प्रदेश आपके निर्वाचन और सर्वसम्मत निर्वाचन का अभिनन्दन करेगा। जैसा हमारा सदन है ऐसी संस्था का अध्यक्ष-पद बहुत ही कठिन पद है। इसके लिये एक नहीं अनेक गुणों की आवश्यकता होती है, विद्या चाहिए, लोकतांत्रिक संस्थाओं के जो नियम हैं अपने देश के और दूसरे देशों के जहां कि ऐसी प्रथा प्रचलित है, उनका ज्ञान चाहिये। केवल नियमों का नहीं, लिखित अलिखित जो भी परम्परायें हैं, उनका ज्ञान भी गम्भीर होना चाहिये। विशेष व्यक्तित्व होना चाहिये जिसका आदर सभी लोग करें। कोई ठीक हिन्दी शब्द जल्दी में समझ में नहीं आ रहा है इसलिये कहता हूं अंग्रेजी शब्दों में उस गुण की बहुत जरूरत है, जिसे 'टैक्ट' कहते हैं और वह दूसरी चीज जिसको सेन्स आफ ह्यमर कहते हैं। आप हमारे लिये, इस सदन के लिये कोई नये नहीं हैं। वर्षों से इस सदन को आपके इन गुणों और दूसरे गुणों का परिचय है।

सब से बड़ी चीज जोकि ऐसी संस्था के अध्यक्ष में होनी चाहिये वह है निष्पक्षता और निष्पक्षता का होना ही काफी नहीं है, बल्कि यह बात भी होना चाहिये कि सब लोग इस बात को स्वीकार करें कि वह व्यक्ति निष्पक्ष है। इंग्लैंड में तो ऐसा होता है कि जो व्यक्ति एक बार अध्यक्ष होता है दूसरे चुनाव के मौके पर प्रायः उसका विरोध नहीं होता। अभी अपने देश में हम ऐसी परम्परा नहीं बना सके हैं। इसलिये अध्यक्ष को चुनाव लड़ना पड़ता है और जब वह चुनाव लड़ता है तो किसी न किसी पार्टी की तरफ से खड़ा होता है। निश्चय ही किसी पार्टी के सिद्धान्त उसको सम्मत होंगे। परन्तु एक बार अध्यक्ष चुने जाने के बाद यह आशा की जाती है कि उसकी निजी व्यक्तिगत सम्मति किसी प्रश्न पर कुछ भी हो, सदन में वह पार्टियों के बीच में पूरे तौर से वैसे ही निर्द्वन्द और निष्पक्ष रहेगा जिस तरह से अपनी पुरानी उपमा दी जाय "जल में जैसे कमल रहता है"। मैं समझता हूं कि आपके सामने किसी और नाम का प्रस्तावित न होना इस बात का प्रमाण है कि जितने भी दल इस सदन में हैं सभी आपके इस गुण को पूरी तौर से मानते हैं।

इतना ही नहीं, अध्यक्ष सदन के प्रत्येक व्यक्ति, प्रत्येक वर्ग और सारे सदन के अधिकारों का रक्षक होता है। स्पीकर का पद इंग्लैंड में बहुत दिनों से चला आ रहा है। उसका अपना इतिहास है। वह इतिहास हमारे देश में दोहराया नहीं गया, लेकिन जो कुछ परम्परायें उसके साथ चली आ रही हैं उनको तो हमने कुछ लिया है और हम इस बात की आशा करते हैं कि स्पीकर बगैर किसी पार्टी के लिहाज के किसी पार्टी का भी वह व्यक्ति हो, कोई भी जगह हो और कोई भी परिस्थिति हो, जो प्रिविलेजेज हैं सदस्यों के और सदन के, उनकी पूरी रक्षा करेगा। इस दृष्टि से वह सदन का हर जगह पर हर अवस्था में प्रतीक है, प्रतिनिधि है।

इस बात का भी हमको अनुभव है कि आपने किस प्रकार सदन की मर्यादा की रक्षा की है। कोई नया व्यक्ति हो तो उसके सम्बन्ध में सदन को कितो लम्बे परिचय देने की आवश्यकता होती है। आप जैसे व्यक्ति के लिये यह सर्वथा अनावश्यक है। मैं ऐसा समझता हूं कि आपको इस पद के लिये पुनर्निर्वाचित कर के सदन ने अपने सम्मान और कर्तव्य की वृद्धि की है

*वक्ता ने भाषण का पुनरीक्षण नहीं किया।

और हमको इस बात की पूरी आशा है कि आपके द्वारा हमको पथ-प्रदर्शन होता रहेगा और उस पथ पर चल कर हम इस सदन की मर्यादा की वृद्धि करेंगे और अपने प्रदेश में लोक-तांत्रिक परम्पराओं को जड़ पुष्ट करेंगे। इस समय आप कुछ अस्वस्थ हैं। हम सब की भगवान से प्रार्थना है कि आप बहुत ही शीघ्र पूर्ण स्वास्थ्य लाभ करें।

मैं एक बार फिर आपका अभिनन्दन करता हूं और आपकी सेवा में बधाई अर्पित करता हूं और आप को बधाई देता हूं कि आपने अस्वस्थ होते हुए भी हमारा मान बढ़ाया और इस गुरुतर कर्तव्य का भार ग्रहण किया।

श्री त्रिलोकीसिंह (जिला लखनऊ)--श्रीमन्, एक पैर में कुछ तकलीफ होने के कारण.....

श्री अध्यक्ष--आप बैठ कर भाषण करें।

श्री त्रिलोकीसिंह--धन्यवाद !

अध्यक्ष महोदय, इस आदरणीय सदन के दोबारा अध्यक्ष चुने जाने पर मैं आपको अपनी ओर से और प्रजा सोशलिस्ट पार्टी के सदस्यों की ओर से हार्दिक बधाई देता हूं। श्रीमन्, आपको पुनः इस पद के लिये निर्वाचित कर इस सदन ने और हमने उस सर्वमान्य संसदीय प्रथा का अनुसरण किया है कि जिससे हमारा ही मान नहीं, इस सदन का ही मान नहीं, बल्कि अध्यक्ष पद के मान को भी बढ़ाया है। मुझे पूर्ण आशा है कि आप इस अध्यक्षता के पद के कार्य को अपनी स्वास्थ्य की खराबी के होते हुये भी उसी प्रकार से अंजाम देंगे जिस प्रकार आपने गत ५ वर्ष इस पद के भार को सम्भाला।

श्रीमन्, आप हमारे लिये कोई नये आदमी नहीं हैं। इस सदन का ५ वर्ष जिस कुशलता से, निष्पक्षता से और दृढ़ता के साथ आपने कार्य को चलाया है वह किसी से छिपा नहीं है। इस प्रदेश के आप बहुत मशहूर नागरिक हैं। यह सभी को मालूम है कि जिस समय आपने अध्यक्ष पद को ग्रहण किया उसके पूर्व लगातार कितने वर्ष आप झांसी म्युनिसिपल बोर्ड के चेयरमैन रहे। मुझे यह भी मालूम है कि म्युनिसिपैलिटी के चेयरमैन के पद पर एक पार्टी के आदमी होते हुए भी वहां निष्पक्षता और दृढ़ता की जो साख उस समय आपने कायम की थी उससे कहीं ज्यादा दृढ़ता और निष्पक्षता का सबूत पिछले ५ वर्षों में आपने दिया है। मुझे पूर्ण आशा है कि आपकी अध्यक्षता में इस आदरणीय सदन के हितों की और उसके मान की रक्षा होगी, उसके अधिकारों को आगे बढ़ाया जायगा और हम उस प्रकार की प्रथाएं कायम कर सकेंगे जो आगे आने वाले सदन के लिए दूसरे आदरणीय सदनों के लिए, जो हमारे देश में और हमारे देश के बाहर हैं, उनके लिये एक प्रमाण के तौर पर होंगी।

मैं ईश्वर से प्रार्थना करता हूं कि वह आपको जल्द स्वस्थ करे और दीर्घायु करे ताकि आपकी संरक्षता में हमारा काम उस खूबी से चल सके जैसा मुझे कोई दूसरा आदमी नहीं नजर आता है चला सकेगा।

मैं आपको इस पद पर पुनर्निर्वाचन के लिए बधाई देता हूं और आपको यह आश्वासन दिलाता हूं कि जब कभी कोई ऐसा प्रश्न इस आदरणीय सदन के सामने और श्रीमन् के सामने उपस्थित होगा जिसमें कुछ कठिनाई श्रीमन् को या सदन को उसके हल करने में मालूम हो, तो आप सदा हमें पायेंगे कि हम आपकी पूरे तौर पर सहायता करने को तैयार रहेंगे।

मैं एक बार फिर इस पद पर चुने जाने पर आपका अभिनन्दन करता हूं।

श्री राजनारायण (जिला वाराणसी)--माननीय अध्यक्ष महोदय, आपके इस चुनाव पर मैं अपनी और अपनी पार्टी की ओर से आपको हार्दिक बधाई देता हूं।

श्रीमन्, जब से नव-निर्वाचित सदस्यों का चुनाव हुआ है और इस विधान मंडप में बैठकर अध्यक्ष पद के निर्वाचन की चर्चा चली है तब से हमारे सामने यह प्रश्न अनेक प्रकार से प्रस्तुत होता रहा है कि अध्यक्ष का निर्वाचन कैसे हो? मैं यह स्पष्ट कह देना चाहता हूं कि हमारे

[श्री राजनारायण]

बहुत से माननीय सदस्यों ने मुझसे आकर इस बात को जानना चाहा था कि क्या अब की बार अध्यक्ष पद का चुनाव निर्विरोध होगा या नहीं, क्योंकि १९५२ में जब अध्यक्ष पद का चुनाव हुआ था तो वह निर्विरोध नहीं हो पाया था। कुछ लोगों के दिमाग में यह बात थी कि सम्भवतः अब की बार भी अध्यक्ष के पद का चुनाव निर्विरोध न हो। श्रीमन्, मैंने उनके सामने स्पष्ट तरीके से कहा था कि हम चाहते हैं कि हमारे प्रदेश में और हमारे देश में स्वस्थ जनतांत्रिक प्रणाली प्रतिष्ठित हो और स्वस्थ जनतांत्रिक प्रणाली के प्रतिष्ठित होने के लिये अध्यक्ष पद के चुनाव का निर्विरोध होना आवश्यक है, जैसा कि माननीय नेता सदन ने कहा। उन्होंने प्रश्न भी किया था कि १९५२ में ऐसा क्यों नहीं हुआ? मैंने उनको बतलाया था कि १९५२ में माननीय गोविन्द वल्लभ पंत जो सदन के नेता थे, हमने उनसे बड़ी कोशिश की थी कि अध्यक्ष पद का चुनाव निर्विरोध हो और हमने मांग की थी कि उपाध्यक्ष का पद विरोधी दल की ओर जाना चाहिये। लकिन किसी प्रकार से वह बात नहीं हो पाई। उस समय अध्यक्ष पद के चुनाव में उम्मीदवार खड़े किये गये थे। अब की बार इस सदन को भी प्रसन्नता होगी और आप लोगों को भी प्रसन्नता होगी कि अध्यक्ष पद का चुनाव निर्विरोध हुआ।

मैं एक आशा और अरमान को लेकर अपने भाव सदन के सम्मुख प्रस्तुत करना चाहता हूं। स्वस्थ जनतांत्रिक प्रणाली को चलाने के लिये यह नितांत आवश्यक है कि अध्यक्ष का किसी भी पार्टी से संबंध न रहे, अध्यक्ष के चुनाव होने के बाद। मैं जानता हूं कि माननीय नेता सदन और माननीय त्रिलोकी सिंह जी और माननीय दूसरे सम्मानित सदस्य इस स्वस्थ जनतांत्रिक प्रणाली से सहमत हैं। हमारे प्रदेश से जब कभी भी इस तरह की परिस्थिति पैदा हुई तो हमने इसी पुरानी परम्परा को अपनाया है। जब यहां पर माननीय पुरुषोत्तमदास जी टंडन के चुनाव की बात हुई तो उस समय यह चीज उपस्थित हुई थी। उस समय कांग्रेस सोशलिस्ट पार्टी के नेता आचार्य नरेन्द्र देव जी थे। मैंने उनके भाषण का अध्ययन किया है। उन्होंने उस समय कहा था कि यह सही है कि अध्यक्ष का चुनाव होने के बाद उनका किसी राजनीतिक दल से संबंध नहीं रहना चाहिये, लेकिन अभी हमारा देश गुलाम है, अभी हमको पोलिटिकल फ्रीडम के लिये, स्वतंत्रता संग्राम के लिये लड़ना है, इसलिये अध्यक्ष चाहते हैं कि राजनीतिक संग्राम को अबाध गति से चलाने के लिये, उस समय की राष्ट्रीय संस्था जो एक नेशनल फ्रंट के रूप में कांग्रेस थी, उसके सदस्य बने रहें तो रहने दिया जाय। आज वह परिस्थिति नहीं है। आज वह परिस्थिति बदल गयी है। अब हमें देश का निर्माण करना है। विदेशी पंजे से हमारा देश मुक्त है। आज विदेशी हुकूमत नहीं है। आज अपने देश में अपने देश वालों की हुकूमत है। इसलिये वह तर्क जब गुलाम मुल्क था, अंग्रेजी हुकूमत यहां क़ायम थी उस समय के लिये मान्य था, इस समय के लिये मान्य नहीं होना चाहिये।

श्रीमन्, जहां तक आपके कुछ व्यक्तिगत गुणों का सम्बन्ध है, जहां तक आपके व्यक्तित्व का प्रभाव है, मैं इस सदन के सम्मानित सदस्यों से कहना चाहता हूं कि मैं बराबर सराहना करता रहा हूं। मैं पिछले पांच साल इस सदन में आपके अध्यक्ष पद के अन्दर काम करने का मौका प्राप्त कर चुका हूं और, श्रीमन् आप को भी स्मरण होगा, इस सदन के जो पुराने सदस्य हैं उनको भी जानकारी होगी कि शायद मैं एक ऐसा सदस्य रहा हूं जिसके कारण कभी-कभी माननीय अध्यक्ष महोदय को कुछ चिन्ता होती रही है। अक्सर ऐसी परिस्थिति इस सदन में उत्पन्न हुई है कि मुझे कहना पड़ा है कि मैं माननीय अध्यक्ष महोदय की व्यवस्था से सहमत नहीं हूं और यह कह करके दुःख के साथ हमें इस सदन का परित्याग करना पड़ा है, एक बार नहीं अनेक बार। मुझे मालूम है कि जब मैं यह कह कर के सदन का परित्याग करता था तो माननीय अध्यक्ष महोदय को कष्ट होता था। ऐसी बात नहीं है कि उनको कष्ट नहीं होता था और उसके बाद भी जब कभी चर्चा होती थी तब भी उनको जो कष्ट रहता था उसकी अनुभूति होती थी।

इस सदन के बहुत से सम्मानित सदस्य सोचते होंगे, कुछ लोगों के हृदय में ऐसी बात होती होंगी कि क्या इन बातों का कहना आज आवश्यक था। मैं उन्हें कहना चाहता हूं कि अगर आज एक सच्चे विधायक की हैसियत से मैं अपने भावों को दबा कर रखता हूं तो मैं अपने कर्तव्य का पालन करने वाला नहीं कहा जाऊंगा। इसीलिये मैं सदन के तमाम सम्मानित सदस्यों से कहूंगा कि जब वे सदन के सदस्य की हैसियत से बैठें तो अपने भाव को बिना किसी हिचक के कहने की हिम्मत रखें और कहा करें।

श्रीमन्, मैं आपसे यह निवेदन करूंगा कि आप एक स्वस्थ परम्परा को कायम रखें। स्वस्थ परम्परा को कायम रखने के लिये जब पुराना सदन उठने वाला था उस समय भी मैंने निवेदन किया था कि अध्यक्ष पद के लिये जो अध्यक्ष की हैसियत से काम कर चुके हों उनके विरोध में कोई राजनीतिक पार्टी अपने उम्मीदवार न खड़े करे। उसके लिये जरूरी था कि अध्यक्ष जो इस सदन में रह चुके हों जब वे चुनाव के मैदान में उतरें तो किसी राजनीतिक पार्टी का लेबिल लगा कर न उतरें। तभी तो उनका चुनाव निर्विरोध हो सकता है। तभी तो उनके विरोध में कोई दूसरा दल अपने उम्मीदवार को खड़ा नहीं कर सकता है। जब तक ऐसी बात नहीं होगी मुझे हिचक है कि वह स्वस्थ परम्परा जिसको चलाने की ओर माननीय नेता सदन ने संकेत किया है, जिसको चलाने की ओर और सदस्यों ने संकेत किया है, शायद चलने में दिक्कत पड़े। इसलिये हम वही चाहते हैं कि अध्यक्ष बिना किसी हिचक के, बिना किसी बाधा के, बिना किसी चिन्ता के, बिना किसी संकोच और भय के अपनी व्यवस्था के देने में स्वतंत्र हों। अध्यक्ष जब अपनी व्यवस्था दें तो उनको इस बात का भी भान हो कि यदि उनकी व्यवस्था से किसी पक्ष विशेष का अहित होता है, कोई पक्ष विशेष उनकी व्यवस्था से रंजित होता है तो भी माननीय अध्यक्ष महोदय के विरोध में अपनी पार्टी के उम्मीदवार को खड़ा करने की हिम्मत न करे। तभी तो अध्यक्ष की व्यवस्था स्वस्थ, न्याययुक्त और पूर्ण कही जा सकती है।

मैं आज अपने इन उद्गारों को आपकी सेवा में व्यक्त करते हुए इसी आशा और इसी विश्वास को ले करके पुनः आपका अभिनन्दन करना चाहता हूं कि आप अपनी लोकतांत्रिक परम्परा को स्वस्थ रूप से विकसित होने में हमारे यहां जो दोष, जो कमियां और खामियां रह गयी हैं उनका निराकरण करेंगे और इस सदन के प्रत्येक सम्मानित सदस्य के अधिकारों की सुरक्षा करेंगे। इस आशा के साथ आपका अभिनन्दन करते हुये बैठता हूं।

श्री अध्यक्ष--मेरे पास अभी पालीवाल जी ने एक पार्टी के बारे में सूचना भेजी है। मैं उनको मौक़ा दूंगा, लेकिन अन्त में मौक़ा दूंगा। इसका मतलब यह नहीं है कि इससे उनकी प्राथमिकता सिद्ध होती है। ऐसी बात नहीं है, लेकिन जिन पार्टियों के नाम मेरे पास आ गये हैं उनको मैं पहले मौक़ा दूंगा। मैं सिलसिलेवार नाम ले रहा हूं।

श्री यादवेन्द्रदत्त दुबे (जिला जौनपुर)--माननीय अध्यक्ष महोदय, आज आपका निर्विरोध चुनाव होने के लिये मैं आपका अभिनन्दन करता हूं और हार्दिक बधाई देता हूं। जनतांत्रिक पद्धति में यह निर्विरोध चुनाव का जो प्रथम कदम उठा है, मैं समझता हूं कि यह कदम बहुत ही उचित दिशा में है और इसके द्वारा जनतंत्र के लिये एक बहुत ही स्वस्थ और लाभप्रद परम्परा की स्थापना हुई है। श्रीमन्, आपका निर्विरोध चुना जाना आपकी निष्पक्षता और न्यायप्रियता का प्रतीक है। हम भारतीय जनसंघ की ओर से आपको पुनः बधाई देते हैं और आपसे यह आशा और विश्वास रखते हैं कि आप सदन के सदस्यों के कर्तव्य और अधिकारों की पूर्ण रक्षा करेंगे और उनका उपयोग करने में हम सब पर आपकी संरक्षता का सदैव उदार हाथ रहेगा। ईश्वर से प्रार्थना है कि आप शीघ्र स्वास्थ्य लाभ करें। मैं फिर से आपका हार्दिक अभिनन्दन करता हूं और आपको बधाई देता हूं।

*श्री झारखंडे राय (जिला आजमगढ़)--अध्यक्ष महोदय, आपका फिर आने वाले पांच वर्ष के लिये अध्यक्ष पद पर पुर्नानिर्वाचन, इस बात का सबसे बड़ा प्रमाण है कि पिछले पांच वर्षों में आपने जिस योग्यता, निष्पक्षता और सदाशयता से कार्य किया है वह सराहनीय है और उसने हम सब में, चाहे हम जिस भी विचार के रहे हों, एक श्रद्धा का भाव पैदा किया है। यह स्पष्ट है कि आज आपका इस पद के लिये पुर्नानिर्वाचन आपके कार्य को अगले पांच वर्ष के लिये कुछ कम कठिन नहीं बनाता है जब कि पिछले सदन से इस सदन में शासक पार्टी से विरोधी दल के लोग अधिक संख्या में आये हैं। आपका कार्य कठिन होगा और इस कठिन कार्य को निभाने का भार आपने जिस उदारतापूर्वक ग्रहण किया है, मैं समझता हूं कि यह आपके बड़प्पन का परिचायक है। आज के जगत में जिसको कि हम जनतंत्रवादी युग कहते हैं, खास कर बुर्जुआ जनतंत्रवाद में जब कि एक से अधिक पार्टियां हों और एक से अधिक पार्टियां जहां कि जरूरी और अनिवार्य शर्त समझी जाती है, उस हालत में पक्षपात से रहित होना, निष्पक्ष होना, कितना कठिन कार्य होता है, इसका अनुभव आपने पिछले पांच वर्षों में किया है और खासकर उस समय जबकि आपका भी एक विशेष पार्टी से संगठनिक संबंध रहा है। जबसे राजनीति में आपने पदार्पण किया तब से जिस पार्टी के साथ आपका संबंध रहा और आज भी है, उससे संबंध रखते हुए विभिन्न पार्टियों और दलों के इस सदन में एक तटस्थ और निष्पक्ष भाव रखना कितना कठिन कार्य है, खासकर मानसिक जगत में कितना जोर पड़ता है, इससे, इसका अनुभव आपने अवश्य किया होगा। मैं यही कामना करता हूं कि आने वाले पांच वर्षों में आप अपने इस कार्य में सफल हों जैसे कि आप पिछले पांच वर्षों में रहे हैं। जहां तक मेरा संबंध है या मेरी पार्टी, कम्युनिस्ट पार्टी के चुने हुए विधान सभा के सदस्यों का संबंध है, उनकी ओर से मैं आपको विश्वास दिलाता हूं कि जहां तक संभव होगा जनतंत्रवादी परम्पराओं की स्वस्थ स्थापना के लिये आपके पद और मर्यादा का पूरा ध्यान रखते हुए, जितनी भी संभव सहायता होगी, हम आपको और इस सदन के और सभी सदस्यों को देने के लिये तैयार रहेंगे।

आपके इस निर्वाचन के लिये एक बार मैं फिर आपको अपनी ओर से और अपनी पार्टी की ओर से बधाई देता हूं।

श्री श्रीकृष्णदत्त पालीवाल (जिला आगरा)--माननीय अध्यक्ष महोदय, अभी तक जिन सम्मानित सदस्यों ने दलों के नेताओं की हैसियत से आपके निर्विरोध और सर्वसम्मत चुनाव पर जो सुन्दर और सम्यक् भावना प्रकट की है उनसे मैं अपने को और स्वतन्त्र प्रगतिशील विधान सभाई दल को सम्बन्धित करता हूं। मैं यह समझता हूं कि आपका यह निर्विरोध और सर्वसम्मत चुनाव हमारे प्रदेश के लिये हर्ष, गर्व और सौभाग्य की बात है। ऐसी स्वस्थ और अच्छी परम्परा स्थापित करने के लिये या उसको पुनः स्थापित करने के लिये, मैं समझता हूं कि यह सदन भी बधाई का पात्र है। आपने अपने लम्बे सार्वजनिक जीवन में विविध पदों पर जहां काम किया है उनकी जानकारी होने का मुझे सौभाग्य प्राप्त है। उस जानकारी के आधार पर मैं यह कह सकता हूं कि प्रत्येक पद पर आपने अपनी निष्पक्षता का अपनी सार्वजनिक सदाचार भावना का और सार्वजनिक सदाशयता का सदैव ध्यान रखा है। पिछले ९ महीने में जब मैंने अध्यक्ष की हैसियत से आपके काम को यहां देखा तो मेरे मन में भी यदा-कदा आपकी व्यवस्थाओं के सम्बन्ध में शंका उत्पन्न हुई लेकिन विरोध की मात्रा, विरोध प्रकट करने की मात्रा तक नहीं पहुंची। सदैव मैंने यह समझा कि या तो मेरी गलती होगी या स्वस्थ और सच्चे मतभेद की बात से अधिक बढ़कर बात नहीं है। और यह भावना मेरे मन में आज भी है।

मैं तो यह आशा करता हूं कि हम सब की यह इच्छा है कि हमारे प्रदेश में यह स्वस्थ परम्परा कायम हो कि अध्यक्ष के मुकाबले में कोई उम्मीदवार खड़ा न हो। केवल इस सदन में ही नहीं, बल्कि आम चुनाव में भी अध्यक्ष का निर्वाचन निर्विरोध हो। मैं

---

*वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया।

यह आशा करता हूं कि आपके अनेक गुणों के कारण हमारे प्रदेश को यह गौरव और परम्परा कायम करने का अवसर मिलेगा।

मैं एक बार फिर अपनी ओर से और स्वतन्त्र प्रगतिशील विधान सभाई दल की ओर से आपके इस निर्विरोध और सर्वसम्मत चुनाव पर हार्दिक बधाई देता हूं।

श्रीमती चन्द्रावती (जिला बिजनौर)--अध्यक्ष महोदय, आज सदन में आपका पुनः निर्वाचित होना हम सबके लिये एक परम सौभाग्य की बात है। मैं महिला वर्ग की ओर से आपका इस अवसर पर हार्दिक अभिनन्दन करते हुए आपको बधाई देती हूं। और पुरानी सदस्या होने के नाते यह बात कहना नहीं भूलूंगी कि आपका गत वर्षों में जो कार्य रहा, उसमें हम सब के लिये न्यायपूर्वक और सबका यथोचित मान करते हुए सदा आपने आदर किया। अधिक कुछ कहना मेरे लिये इस समय इतना सिद्ध नहीं हो सकता जितना कि आपका पुनः निर्वाचित होकर अध्यक्ष पद ग्रहण करना स्वयं ही प्रमाणित है। आपकी योग्यता, सद्भावना, सहानुभूति और आपकी पिछले वर्षों की इन सब बातों ने एक ऐसी श्रद्धा के रूप में हम लोगों के हृदय में विश्वास पाया है कि हम अपने हर्ष को पूरी तरह से व्यक्त करने में असमर्थ हैं हमें उम्मीद है कि आप आगे भी इसी प्रकार सदन के सदस्यों के साथ कार्य करेंगे। भगवान आपकी अच्छी भावना को प्रगति रूप से बल दे और आपको शीघ्र ही आरोग्यता प्रदान करे यही हमारी शुभकामना है। अन्त में मैं एक बार फिर हार्दिक बधाई देती हूं।

श्री अध्यक्ष--नेता सदन-मुख्य मंत्री जी, अन्य दलों के नेतागण तथा उपस्थित माननीय सदस्यवृन्द, आप लोगों ने मुझको इस आदरणीय सदन का अध्यक्ष पुनः चुनकर मेरे प्रति जिस स्नेह, श्रद्धा और विश्वास का परिचय दिया है उसके लिये मैं आप सभी लोगों का आभारी हूं और हृदय से आप सभी लोगों को धन्यवाद देता हूं। मैं जानता हूं कि यह पद जो आपने मुझे देने की कृपा की है बहुत ही उत्तरदायित्वपूर्ण है। पिछली विधान सभा का अध्यक्ष रहते हुए इस आदरणीय सदन की जो मैंने सेवा की है वह कहां तक सन्तोषजनक है रही है, इसका निर्णय करने वाले आप लोग ही हैं। मुझे केवल इतना सन्तोष अवश्य है कि जहां तक मैं समझता हूं मैंने किसी माननीय सदस्य को शिकायत का अवसर नहीं दिया और अपनी शक्ति के अनुसार हर सदस्य की तथा इस आदरणीय सदन की प्रतिष्ठा बढ़ाने का प्रयत्न किया है। इस बार फिर आप जब यह उत्तरदायित्व मेरे कन्धों पर रख रहे हैं तो मैं आप लोगों की सहायता तथा सहयोग की आशा पर भरोसा रखते हुए फिर इस सदन की सेवा करने का बोझ अपने कन्धों पर लेता हूं, किन्तु मैंने आप सब के विश्वास एवं सहयोग का भरोसा करके ही यह पद स्वीकार किया है यह आप जान लें।

आप लोगों को मालूम है कि अध्यक्ष का पद सभी देशों में बहुत ही आदर और श्रद्धा का पात्र माना जाता है। अध्यक्ष के प्रति यह भरोसा किया जाता है कि किसी भी दल से उसका लगाव न हो और किसी भी दल से उसको विरोध न हो। वह सभी दलों को समदृष्टि से देखता है और सभी के विचारों का आदर करता है। इस आसन पर बैठ कर किसी भी मनुष्य का यह परम कर्तव्य हो जाता है कि वह न्याय की तराजू के दोनों पलड़ों को समान रखे। ऐसे मार्ग पर चलते हुए मैं यथासम्भव आप लोगों की सेवा करने का प्रयत्न करूंगा।

पिछले सदन की अपेक्षा यह सदन अवश्य कुछ अपनी विशेषता रखता है, इसलिये कि सरकारी दल के सदस्यों की संख्या पहले की अपेक्षा कम है और अन्य दलों की संख्या पहले की अपेक्षा अधिक है, किन्तु जो भी महानुभाव जनता के प्रतिनिधि की हैसियत से निर्वाचित होकर आये हैं उन सभी से मैं यह आशा रखता हूं कि वे सदन की मर्यादा को बनाये रखने में और ऊंचा करने में अध्यक्ष को पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगे।

आज हमारे सामने बहुत सी राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय महत्वपूर्ण समस्याएं हैं। उन्हें सुलझाने का हमें प्रयत्न करना है और देश को शीघ्र से शीघ्र उन्नति पथ पर ले जाना है। इस सदन द्वारा हमें ऐसे ही कानूनों को शीघ्र पारित करना है जिनसे हमारी योजनाएं शीघ्र सफल हों

[श्री अध्यक्ष]

और उनमें किसी प्रकार की रुकावट न पड़ने पावे और यह सब तभी सफल हो सकता है जब आप सब माननीय सदस्य समय का सदुपयोग करें और उसे अनुपयोगी कार्य से बचायें।

इस सदन में अबकी बार सभी दलों के अनुभवी, दक्ष तथा कर्तव्यपरायण सदस्य अच्छी संख्या में विद्यमान हैं। किसी भी प्रदेश में सरकार को उचित रूप में चलाने के लिए विरोधी दल का अस्तित्व नितान्त आवश्यक होता है। जनतंत्र में विरोधी दल द्वारा की गई सही समालोचना सरकार को निरंकुश होने से बचाती है। अतः मैं विरोधी दल के सभी माननीय सदस्यों से प्रार्थना करूंगा कि वे लोग अपने कर्तव्यों को ऐसे समुचित ढंग से निभायें कि अन्य सदस्यों को वह खटकने न पाए। मैं सभी माननीय सदस्यों से कहना चाहता हूं कि आलोचना भी किसी सार्वजनिक हित की पूर्ति के लिये होना चाहिए। उनका अपनी मधुर एवं शील भाषा तथा अपने तर्क से और अपने शुद्ध विचारों द्वारा सदन के सदस्यों को अपने मत के पक्ष में लाने का प्रयास होना चाहिए। शांत वातावरण में ही गूढ़ विषयों पर सही ढंग से विचार विनिमय हो सकता है और स्वस्थ पद्धतियों एवं परम्पराओं का सर्जन हो सकता है। जनता की दृष्टि में सदन की प्रतिष्ठा को ऊंचा उठाने का मापदंड भी यही होता है।

जो लोग बहुमत में हैं उनका दायित्व भी पिछले समय की अपेक्षा बहुत बढ़ गया है। यह तो ठीक है कि जो विचार वह इस सदन के समक्ष रखेंगे वह अधिकतर स्वीकार हो जायेंगे अथवा पारित हो जायेंगे, किन्तु फिर भी वे लोग इस बात का यथासम्भव प्रयत्न करें कि जिससे माननीय विरोधी दल के सदस्य भी बरबस उनकी ओर खिंच आएं और यथा-सम्भव एक मत से ही बहुत से निर्णय सदन में हो सकें।

अन्त में मैं फिर सदन के सभी माननीय सदस्यों को हृदय से धन्यवाद देता हूं और आप सब लोगों की सहायता एवं सहयोग की आशा करते हुए इस पद को स्वीकार करता हूं। जय हिन्द!

(कुछ ठहर कर)

अब आज का कार्यक्रम समाप्त होता है। अब हम उठते हैं और कल ११ बजे जब श्री राज्यपाल का ऐड्रेस होगा उस वक्त हम लोग एकत्रित होंगे।

(इसके बाद सदन ११ बजकर ५६ मिनट पर अगले दिन के ११ बजे तक के लिए स्थगित हो गया।)

लखनऊ,
२० चैत्र, शकाब्द १८७९;
(१० अप्रैल, १९५७ ई०।)

देवकीनन्दन मित्थल,
सचिव, विधान सभा,
उत्तर प्रदेश।

पी० एस० यू० पी० ए० पी०--१२ एल० ए०--१९५७--७९६।